कविता

16

नवयुग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

विनोद 'प्रसून'

ज्ञान, मूल्य, रुचि, हुनर, कौशलों की मजबूत लड़ी है।
शिक्षा की यह नीति नई, नवयुग के साथ खड़ी है।।

तर्क, सृजन, वैज्ञानिक चिंतन संग नवयुग तैयारी।
और समस्या समाधान, सामाजिक जिम्मेदारी।।

नैतिक चिंतन और कर्म संग डिजिटल साक्षरता है।
संस्कार, सद्भाव, हुनर से अंतर नित भरता है।।

है समग्रता नव विकास की सामाजिकता आए।
भावनात्मक उद्देश्यों से शिक्षा खिल-खिल जाए।।

रटने पर ना जोर जरा-सा, समझ, सृजन पर बल है।
बाल केंद्रित शिक्षा से ही महका-महका कल है।।

आपस में सहयोग सीख लें, और संवाद बढ़ाएँ।
भाव प्रकट हों मन से बिल्कुल तनिक नहीं घबराएँ।।

आत्मसात अवधारणाएँ हों, अधिगम सहज, सरल हो।
शिक्षा का तब अति सुखकारी, उपयोगी-सा फल हो।।

यह इक्कीसवीं सदी निखरकर इसके संग खिलेगी।
और राष्ट्र को इसके द्वारा मंजिल नई मिलेगी।।

शिक्षा की नव नीति कह रही, सपने पूरे करना।
चित्र देश का उज्ज्वल हो, न्यारे-न्यारे रंग भरना।।

**हिंदी विभागाध्यक्ष*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा 201 310